अनुसूचित जाति में शिक्षा द्वारा सामाजिक गतिशीलता

डॉ. अमिता बिहान

शोध सारांश

मैकाइवर एवं पेज (1949) जहां जीवन है वही समाज है व्यक्ति और समाज मे पारस्परिक निर्भरता पाई जाती है व्यक्ति ने एक दुसरे के साथ सामाजिक सम्बन्ध स्थापित कर समाज के निर्माण एवं विकास मे सहायता प्रदान की है, वही समाज ने व्यक्ति का समाजीकरण कर उसके व्यक्तिव विकास मे योग दिया है। सभ्यता एवं संस्कृति के आधार पर समाज को कई वर्गो मे विभाजित किया गया है। इस कारण समाज मे हर व्यक्ति को अपनी एक निजी सामाजिक स्थिति प्रदान हो गयी ,जिसे आगे चलकर जाति वयवस्था का नाम दे दिया गया। सामाजिक परिवर्तन एवं अनुसन्धान समाज शास्त्र का मुख्य विषय है। सामाजिक गतिशीलता भी सामाजिक परिवर्तन का एक पक्ष है। जिसे विशेष अध्ययन के रूप मे समाज शास्त्र में स्थान दिया गया है। अध्ययन हरिद्वार स्थित मायापुर के बाल्मीकी बस्ती के सन्दर्भ मे किया जायेगा।

प्रस्तावना

मैकाइवर एंव पेज, के अनुसार, "समाज रीतियो एवं कार्य प्रणालियो की अधिकार एंव पारस्परिक सहायता की, अनेक समूहों तथा विभागों की, मानव व्यवहार के नियन्त्रणों तथा स्वतंन्त्रताओ की एक व्यवस्था है इस सदैव परिवर्तनशील जटिल व्यवस्था को हम समाज कहते है यह सामाजिक सम्बन्धो का जाल है और यह हमेशा परिवर्तित होता रहता है"

समाज के अन्तर्गत यह जाति का नाम व्यक्ति के सामाजिक एवं जीविका के कार्य का आधार रहा। इस कारण समाज के अन्तर्गत एक अलग प्रकार की कार्य सभ्यता का निर्माण हुआ जो जातिगत कहलायी। प्रत्येक जाति समूह की अपनी एक पहचान अपनी एक अलग परम्परा तथा अपना जातिगत व्यवसाय कार्य सभ्यता के रूप में विकसित होता चला गया। समाज विज्ञानी ऐसे कार्य को परम्परागत सांस्कृतिक संज्ञा प्रदान करते आये है जिसमे हर व्यक्ति अपनी परम्परा प्रथा, जनरीतियो, व्यवसाय इत्यादि को जाति के आधार पर महत्व देता चला गया तथा महत्व देता आ रहा है। भारतीय समाज जो एक तरह से जाति प्रधान समाज है परम्परागत पेशो के साथ जुडा हुआ है। आज भी भारतीय समाज में जाति और परम्परागत पेशे पर्यायवाची के रूप में समझे जाते है और इसमे सामाजिक या व्यवासयिक गतिशीलता कम देखने को मिलती है यद्यपि आधुनिक भारत में जातिगत पेशो में बहुत परिवर्तन आ रहे है और आर्थिक लाभों को देखते हुये अनेक जातिया अन्य व्यवसायों एवं दूसरी जातियों के पेशो को अपना रही है। परन्तु यह सब कुछ एक लम्बी प्रक्रिया के माध्यम से हो रहा है। भारतीय समाज के इस पक्ष से जुडा अध्ययन जिसे हम सामाजिक एवं व्यवसायिक गतिशीलता कह सकते है समाजशास्त्रीय अध्ययनो का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है मानवाधिकार घोषणा पत्र के लेख 26 के अनुसार शिक्षा सबका अधिकार है। शिक्षा व्यक्तित्व के पूर्ण विकास की ओर उन्मुख होगी और व्यक्ति को मानवाधिकारो एवं मूलभूत स्वतन्त्रता के प्रति जागरूक करेगी। शिक्षा सब राष्ट्रों ,जातियों एवं धर्मो में आपसी समझ सहिष्णुता, और सौहार्द की भावना का वातावरण बनायेगी जिससे संयुक्त राष्ट्र विश्व शान्ति को सुरक्षित रखा जा सके। शिक्षा आयोग ने अनिवार्य एंव निशुल्क शिक्षा प्राथमिक शिक्षा की संस्तुति न केवल सामाजिक न्याय एवं जनतंत्र के लिये की थी वरन इसका उद्देश्य सामान्य कार्यकर्ता की क्षमता एवं योग्यता में वृद्धि

करके राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि करना था ।

अध्ययन का क्षेत्र एवं प्रविधि – प्रस्तुत शोध अध्ययन उत्तराखंड राज्य के हरिद्वार जनपद में स्थित मायापुर के "बाल्मीकी बस्ती" है। उत्तराखंड में कुल 13 जिले हैं। परन्तु हरिद्वार उन सब में प्रथम व उच्च स्थान रखता है। पुराण साहित्य में इसका नाम "मायापुरी" या "मायाक्षेत्र" मिलता है वर्ष 2011 की जनगणना के आधार पर जिले की कुल जनसंख्या 19,27,029 है, जिसमे पुरुष 10,25,428 व महिला 901601 है, साक्षरता 74.62% है लिंगानुपात 879 व जन घनत्व 817 है। उपरोक्त जनसंख्या में से यदि अनुसूचित जाति की जनसंख्या को देखा जाए तो अनुसूचित जाति की कुल जनसंख्या 411,274 है, जिसमे पुरुष जनसंख्या 217,981 तथा महिला जनसंख्या 193,293 है। (स्रोत : जनगणना 2011 कई अनुसार)।

अध्ययन के उद्देश्य – प्रस्तुत शोध अध्ययन अनुसूचित जाति में शिक्षा द्वारा सामाजिक गतिशीलता का समाजशात्रीय अध्ययन

1. अध्ययन क्षेत्र से सम्बंधित लोगो की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि क्या है ?

उत्तर – 01 की तालिका

क्र.स.	सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि		उत्तरदाताओ की संख्या	
1.	**आयु समूह**	18 से 24 वर्ष	–	07
		25 से 31 वर्ष	–	08
		32 से 38 वर्ष	–	12
		39 से 45 वर्ष	–	10
		46 से 52 वर्ष	–	09
		53 से 59 वर्ष	–	03
		60 से 66 वर्ष	–	01
2.	**लिंग समूह**	पुरूष	–	32
		स्त्री	–	18
3.	**शैक्षणिक योग्यता**	निरक्षर	–	10
		प्राथमिक स्तर	–	15
		मिडिल	–	10
		हाईस्कूल	–	10
		इण्टरमीडिएट	–	05
4.	**आवासीय स्थिति**	कच्चा मकान से	–	13
		अर्द्वपक्का मकान से	–	08
		पक्का मकान से	–	29
5.	**परिवार**	एकल परिवार	–	46
		संयुक्त परिवार	–	04
6.	**व्यावसाय**	सरकारी नौकरी	–	11
		संविदा पर सरकारी	–	17
		नौकरी	–	15
		प्राइवेट नौकरी अन्य कार्य	–	07

2. **अनुसूचित जाति में परम्परागत व्यवसाय में शिक्षा द्वारा आयी व्यावसायिक गतिशीलता का समाज पर क्या सामाजिक आर्थिक प्रभाव पड़ा है**

उत्तर 02 की तालिका

परम्परागत व्यवसाय में शिक्षा द्वारा आयी व्यवसायिक गतिशीलता का समाज पर सामाजिक आर्थिक प्रभाव

क्र.स.	उत्तरदाताओ का मत	उत्तरदाताओ की संख्या
1.	परम्परागत व्यवसाय करने के सम्बन्ध में परम्परागत व्यवसाय नही करने के सम्बन्ध में	23 27
2.	शैक्षिक योजनाओ के बारे में जानकारी है, के अन्तर्गत शैक्षिक योजनाओ के बारे में जानकारी नही है, के अन्तर्गत	41 09

3.

अध्ययन क्षेत्र से सम्बंधित अनुसूचित जाति के लोगो के सामाजिक जीवन पर शिक्षा द्वारा सामाजिक गतिशीलता का क्या प्रभाव पड़ा है ?

उत्तर 03 की तालिका

क्र.स.	उत्तरदाताओ का मत	उत्तरदाताओ की संख्या
01	बाल–विवाह के हॉ पक्ष में बाल–विवाह नही के पक्ष में	00 50
02	विधवा पुनर्विवाह के पक्ष में विधवा पुनर्विवाह के नही पक्ष में	45 05
03 (प) (पप) (पपप)	शिक्षा का सामाजिक जीवन पर प्रभाव के अन्तर्गत बहुत अच्छा सामान्य कोई नही	45 05 00

उत्तर–3 (पप) की तालिका

शिक्षा का सामाजिक जीवन पर प्रभाव के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं का मत

क्र.स.	उत्तरदाताओ का मत	उत्तरदाताओ की संख्या
01	बहुत अच्छा	45
02	सामान्य	05
03	कोई नही	00
	योग	**50**

अध्ययन के उपर्युक्त प्रथम उद्देश्य के अन्तर्गत उत्तरदाता की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि में आयु, लिंग, परिवार के प्रकार, शैक्षणिक स्थिति, आवासीय स्थिति तथा व्यवसाय का अध्ययन किया ।

द्वितीय उद्देश्य में उत्तरदाताओं के परम्परागत व्यवसाय में शिक्षा द्वारा आई व्यावसायिक गतिशीलता का समाज पर पडें सामाजिक आर्थिक प्रभावो को ज्ञात किया गया।

तृतीय उद्देश्य में अनुसूचित जाति के लोगो के सामाजिक जीवन पर शिक्षा द्वारा सामाजिक गतिशीलता के पडने वाले प्रभावो को ज्ञात किया गया।

अध्ययन प्रारूप एवं परिप्रेक्ष्य – पी.वी.यंग (1960) सामाजिक शोध एक जटिल प्रक्रिया है जिसमे सम्पूर्ण अध्ययन को व्यवस्थित रूप एवं सही दिशा प्रदान करने के लिये एक अध्ययन प्रारूप का निर्माण करना अत्यधिक आवश्यक होता है यह शोध प्रारूप सदैव शोध समस्या की प्रकृति, उद्देश्यो एवं उपकल्पना के अनुरूप होता है (एकोफ, आर. एल. द डिजाइन आफ सोशल रिसर्च)

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अन्वेषणात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग किया गया तथा अध्ययन क्षेत्र बाल्मीकि बस्ती के दो मुहल्ले लिये गये है जिसमे से 50 उत्तरदाता चुने गये हैं इस मुहल्लो के कुछ परिवार ऐसे भी है जिन्होने अपना परम्परागत पेशा छोड़कर अन्य व्यवसाय जैसे ठेली लगाना, औद्योगिक क्षेत्र सिडकुल में मजदूरी करना आदि अपना लिये है। शोधार्थीनी ने उद्देश्यपूर्ण अथवा सविचार निदर्शन प्रवधि का प्रयोग किया है जिसके अन्तर्गत कुल 50 परिवारों का निदर्शन के रूप में चुनाव किया गया है। शोध अध्ययन में प्राथमिक आकडे एकत्रित करने के लिये अनुसुची, अवलोकन एवं साक्षात्कार आदि प्रविधियो का प्रयोग तथ्यों का संकलन करने के लिये किया गया इसके पश्चात प्राप्त तथ्यों का वर्गीकरण व सारणीयन किया गया हैं इन सारणियों को सांख्यकी आधार पर प्रस्तुत करके विश्लेषण किया गया।

आकडो का परिणाम – सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि के बारे में उत्तरदाताओं द्वारा दिया गया विवरण इस प्रकार हैं – कुल 50 उत्तरदाताओं में से प्रत्येक समूह से आयु समूह के अन्तर्गत 18–24 वर्ष आयु समूह से – 07, उत्तरदाता, 25–31 वर्ष आयु समूह से – 08, 32 – 38 वर्ष आयु समूह से 12, 39–45 वर्ष आयु समूह – 10, 46–52 वर्ष आयु समूह से – 09, 53–59 वर्ष आयु समूह – 03 तथा 60–66 वर्ष आयु समूह से– 01 उत्तरदाता हैं इसमे लिंग समूह के अन्तर्गत, पुरुष –32 उत्तरदाता एवं स्त्री – 18 उत्तरदाता हैं शैक्षणिक योग्यता के अन्तर्गत – निरक्षर – 10,

प्राथमिक स्तर – 15, मिडिल – 10, हाई स्कूल – 10, इटरमीडिएट – 05 उत्तरदाता हैं आवासीय स्थिति के अन्तर्गत – कच्चा मकान से –13 अर्धपक्का मकान –08 एवं पक्का मकान से – 29 उत्तरदाता हैं परिवार के अन्तर्गत, एकल परिवार से – 46 तथा सयुक्त परिवार से – 04 उत्तरदाता सम्बंधित हैं व्यवसाय के अन्तर्गत, सरकारी नौकरी से – 11 संविदा पर सरकारी नौकरी – 17, प्राइवेट नौकरी – 15 एवं अन्य कार्य – 07 उत्तरदाता सम्बंधित हैं।

उत्तरदाताओं द्वारा दिये गये द्वितीय उद्देश्य में कुल 50 उत्तरदाताओं में से परम्परागत व्यवसाय करने के सम्बन्ध में – 23 उत्तरदाता, व परम्परागत व्यवसाय नहीं करने कई सम्बन्ध में – 27 उत्तरदाता सम्बंधित हैं तथा शैक्षणिक योजनाओ के बारे में जानकारी है के अन्तर्गत – 41 उत्तरदाता है जानकारी नहीं है के अन्तर्गत द्व 09 उत्तरदाता सम्बंधित है

उत्तरदाताओं द्वारा दिये गये तृतीय उदेश्य में कुल 50 उत्तरदाताओं में से बाल विवाह के सम्बन्ध के अन्तर्गत, बाल विवाह के हाँ पक्ष में से – 00 उत्तरदाता एवं बाल – विवाह के पक्ष में नहीं से – 50 उत्तरदाता सम्बंधित है तथा विधवा पुनर्विवाह के अन्तर्गत – विधवा पुनर्विवाह के हाँ कई पक्ष में से –45 उत्तरदाता एवं विधवा पुनर्विवाह के पक्ष में नहीं से – 05 उत्तरदाता सम्बंधित है तथा शिक्षा का सामाजिक जीवन पर प्रभाव के अन्तर्गत – बहुत अच्छा से – 45, एवं सामान्य से – 05 तथा कोई नहीं – 00 उत्तरदाता सम्बंधित है

निष्कर्ष

अध्ययन के महत्व के अन्तर्गत शिक्षा में व्यक्तियों की रूचि एवं क्षेत्र को वैश्विक स्तर पर देखते हुए इसके समाज पर पडने वाले प्रभावो को ज्ञात किया गया। आज के समय में शोध की आवश्यकता और महता बढती जा रही है। प्रस्तुत शोध अध्ययन "अनुसूचित जाति में शिक्षा द्वारा सामाजिक गतिशीलता" शीर्षक के अन्तर्गत अध्ययन उदेश्यों को लेकर उत्तराखंड राज्य के हरिद्वार जनपद में स्थित मायापुर स्थिति बाल्मीकि बस्ती को अध्ययन का क्षेत्र चुनकर अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षा द्वारा उनके सामाजिक जीवन पर पडने वाले प्रभाव एवं शिक्षा द्वारा सामजिक गतिशीलता का अध्ययन किया गया है।

किसी भी अनुसन्धान की समस्या चुनाव कई बाद अध्ययनकर्ता समस्या कई बारे में कार्य कारण सम्बन्धो का पूर्वानुमान लगा लेता है य पूर्व चिंतन कर लेता है यही पूर्वानुमान प्राकल्पना/उपकल्पना कहलाती है। इस अध्ययन में उपकल्पना के अन्तर्गत नगरीकरण में वृद्धि के साथ–साथ परम्परागत व्यवसाय में व्यवसायिक, एंव सामाजिक गतिशीलत की वृद्धि –एवं आधुनिकीकरण एवं ओधोगिकीकरण मे वृद्धि एवं परम्परागत गतिशीलता में सम्बन्ध पाया जाता है। जहॉ अधिक उत्तरदाता परम्परागत व्यवसाय करने के पक्ष में नहीं है तथा जहॉ अधिक लोगो को शैक्षिक योजनाओ के बारे में जानकारी है। परिणामस्वरूप जहॉ के लोग बाल विवाह के पक्ष में बिलकुल नहीं है एवं विधवा पुनर्विवाह के पक्ष में है तथा शिक्षा का सामाजिक जीवन पर बहुत अच्छा व सकारात्मक प्रभाव पड रहा है।

सुझाव – अध्ययन के निष्कर्ष के उपरान्त जो सुझाव उभरकर सामने आये है वे इस प्रकार है

1. भारतीय समाज में सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन करने के लिये उन छोटी, पिछड़ी और आर्थिक रूप से निर्बल जातियों में पैदा हुये उन सामजिक परिवर्तनों को देखा जाये जो उनके परम्परागत पेशे में पैदा हुई आर्थिक गतिशीलता के कारण उत्पन्न हो रहे है
2. भारतीय समाजो में होने वाली सामजिक और आर्थिक गतिशीलता कई विस्तृत अध्ययन कम संख्या में ही उपलब्ध है इस कारण भावी शोध कर्ताओ को इस बात पर बल देना चाहिए कि वे भारतीय समाज में छोटी

और पिछड़ी जातियों में होने वाली सामजिक गतिशीलता का अध्ययन इस विशेष सन्दर्भ में करे की इसके क्या कारण है, और भारतीय सामाजिक व्यवस्था पर इसके क्या प्रभाव पड़ रहे है

3 भारतीय सामाजिक व्यवस्था में पिछड़ी जातियों द्वारा ऊपर उठने के निरन्तर और लम्बे समय तक किये जाने वाले प्रयत्नों का अध्ययन भी एक महत्वपूर्ण विषय है यह भारतीय समाज में होने वाले परिवर्तनों का दिशा सूचक भी है

***असिस्टेंट प्रोफेसर,**
समाजशास्त्र विभाग
राजकीय महाविद्यालय लम्बगाँव
(टिहरी गढ़वाल)

सन्दर्भ सूची

1. यंग. पी. वी– साइन्टिफिक सोशल सर्वे एंड रिसर्च बाम्बे एशिया पब्लिशिंग हाउस 1960
2. Sinha c - suresh and dhiman k anil research methodology gurukul published 2002
3. Both c - Wayne and Williams's joseph the craft of research Chicago press 2008
4. पारसन्स, टॉलकाट, एनसाइक्लोपीडिया, आफ सोशल साइन्सेज , वॉल्यूम XVI पेज, 213
5. श्रीनिवास, एम. एन. कास्ट इन इंडिया 1962
6. सच्चिदानंद, द हरिजन एलिट 1976
7. बैतई, आन्द्रे, कास्ट क्लास एड पावर ! चेजिगं पैटर्न ऑफ स्ट्राटिफिकेशन इजए तन्जौर विलेडा, आक्सफोर्ड यूनि0 प्रेस ,बम्बई, 1966
8. कर्वे, इरावती, हिन्दू समाज और जातीय व्यवस्था, नई दिल्ली 1975
9. मै. डलबम, डी., सोसाइटी इन इंडिया, पोपूलर प्रकाशन, भारतीय पुनर्मुदण, बम्बई 1972
10 डॉ. अम्बेडकर, बी. आर., द अन्टचेबल! हू वर दे,. ड व्हाई द बिकम अन्टचेबल, अमृत बुक कम्पनी, नई दिल्ली, 1998